Faizane Ghause Aa'zam (Hindi)

(رحمۃ اللہ علیہ)

फ़ैज़ाने ग़ौसे आ'ज़म

सफ़हात 17

तआ़रुफ़े ग़ौसे आ'ज़म	02
इबादाते ग़ौसे आ'ज़म	06
तुलबाए किराम से महब्बते ग़ौसे पाक	10
औलियाए किराम के सरदार	15

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने ग़ौसे आ'ज़म**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैज़ाने ग़ौसे आ'ज़म

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़हात का रिसाला "फ़ैज़ाने ग़ौसे आ'ज़म" पढ़ या सुन ले उस को हमारे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सच्ची महब्बत और ख़ुसूसी फ़ैज़ान नसीब फ़रमा और उसे बे हिसाब बख़्श दे । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुहम्मदे मदनी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ पर पेश किया जाता है ।

(مُعْجَم اَوسط، 84/1، حدیث:241، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

एह़साने अ़ज़ीम

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! अल्लाह पाक का हम अहले सुन्नत पर बड़ा फ़ज़्लो करम है कि उस ने हमें अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ की इ़ज़्ज़तो ता'ज़ीम करने, आ'रास मनाने, मज़ाराते मुबारका पर ह़ाज़िरी देने और इन की सीरत बयान करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई है । औलियाए किराम **अल्लाह** पाक के पसन्दीदा बन्दे होते हैं, इन की सारी ज़िन्दगी **अल्लाह** व रसूल की याद में गुज़रती है, हमें भी इसी त़रह़ शरीअ़त के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये । **अल्लाह** पाक अपने इन नेक बन्दों, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ पर अपनी रह़मतों की बरसात

फ़रमाता रहता है। औलियाए किराम رحمهم الله की शानो अ़ज़मत के लिये येह क़ुरआनी आयत ही काफ़ी है, **अल्लाह** पाक ने अपने पसन्दीदा बन्दों का ज़िक्र ग्यारहवें पारे के बारहवें रुकूअ़ में फ़रमाया है।

चुनान्चे पारह 11 **सूरए यूनुस** आयत नम्बर 62 में इर्शाद होता है :

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

किया ग़ौर जब ग्यारहवीं बारहवीं में मुअ़म्मा येह हम पर खुला ग़ौसे आ'ज़म तुमहें
वस्ले बे फ़ज़्ल है शाहे दीं से दिया हक़ ने ये मर्तबा ग़ौसे आ'ज़म

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, जन्नती इब्ने जन्नती ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی الله عنهما इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ''औलियाए किराम رحمهم الله पर दुन्या में कोई ख़ौफ़ नहीं, न ही वोह आख़िरत में ग़मगीन होंगे बल्कि **अल्लाह** पाक ख़ुशी व इ़ज़्ज़त के साथ उन का इस्तिक़्बाल फ़रमाएगा और उन्हें हमेशा रहने वाली ने'मतें अ़त़ा फ़रमाएगा।'' (ह़िकायतें और नसीह़तें, स. 361)

तआ़रुफ़े ग़ौसे आ'ज़म رحمة الله عليه

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! माहे फ़ाख़िर, रबीउ़ल आख़िर में यूं तो दीगर बुज़ुर्गों के उ़र्स भी हैं मगर येह महीना ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक رحمة الله عليه से ख़ास निस्बत रखता है और इस महीने की 11 तारीख़ को ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رحمة الله عليه का उ़र्स शरीफ़ मनाया जाता है। हमारे प्यारे प्यारे पीरो मुर्शिद सय्यिदी ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक رحمة الله عليه बहुत बड़े वलिय्युल्लाह बल्कि वलियों के भी सरदार थे। आप رحمة الله عليه का मुबारक नाम **अ़ब्दुल क़ादिर**, कुन्यत अबू मुह़म्मद और अल्क़ाबात मुह़्युद्दीन, मह़बूबे सुब्ह़ानी, ग़ौसुस्सक़लैन, ग़ौसुल आ'ज़म वग़ैरा हैं, आप

رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ 470 हि. में बग़्दाद शरीफ़ के क़रीब क़स्बा **''जीलान''** में रमज़ानुल मुबारक की पहली तारीख़ को पैदा हुए । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ अब्बूजान की त़रफ़ से नवासए रसूल इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के ग्यारहवें पोते हैं । (بہجۃالاسرار،ص171) और अपनी अम्मीजान की त़रफ़ से इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बारहवें पोते हैं। (अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने आप की अम्मीजान की त़रफ़ से आप का नसब शरीफ़ येही बयान किया है ।) (نزہۃالخاطر الفاتر،ص12)

आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ बारगाहे ग़ौसिय्यत में अ़र्ज़ करते हैं :

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा औलिया मलते हैं आंखें वोह है तल्वा तेरा
नबवी मींह, अ़लवी फ़स्ल, बतूली गुलशन ह़सनी फूल हुसैनी है महक्ना तेरा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

अब्बूजान को ख़ुश ख़बरी

ग़ौसे पाक के दीवानो ! हमारे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के अब्बूजान ह़ज़रते सय्यिद अबू सालेह़ मूसा जंगी दोस्त رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की विलादत (Birth) की रात देखा कि रसूलों के सरदार जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मअ़ सह़ाबए किराम और औलियाए इ़ज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم इन के घर तशरीफ़ लाए हैं और इन अल्फ़ाज़े मुबारका से ख़ुश ख़बरी से नवाज़ा : ऐ अबू सालेह़ ! **अल्लाह** पाक ने तुम्हें ऐसा बेटा अ़त़ा फ़रमाया है जो वली है और वोह मेरा और **अल्लाह** पाक का मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) है और उस की औलियाए किराम رِحِمَہُمُ اللّٰہ में वैसी शान होगी जैसे अम्बियाओ मुरसलीन عَلَیْہِمُ السَّلَام में मेरी शान है । नीज़ दीगर

अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام ने येह ख़ुश ख़बरी दी कि "तमाम औलियाउल्लाह رِحِمَهُمُ الله तुम्हारे नेक बख़्त बेटे के फ़रमां बरदार होंगे और उन की गरदनों पर इस का क़दम होगा।"

(सीरते ग़ौसुस्सक़लैन, स. 55 ब ह़वाला : तफ़्रीहुल ख़ातिर, स. 12)

जिस की मिम्बर हुई गरदने औलिया उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम
ग़ौसे आ'ज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा जल्वए शाने क़ुदरत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

क़ुत्बे आ़लम

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने अपने ज़मानए मुबारक से ले कर हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के ज़मानए मुबारक तक तफ़्सील से ख़बर दी और फ़रमाया कि जितने भी **अल्लाह** पाक के औलियाए किराम رِحِمَهُمُ الله गुज़रे हैं सब ने शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की ख़बर दी है। सिल्सिलए अ़त्तारिय्या क़ादिरिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : **"मुझे आ़लमे ग़ैब से मा'लूम हुवा है कि पांचवीं सदी के दरमियान में सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की औलादे पाक में से एक क़ुत्बे आ़लम होगा, जिन का लक़ब मुह़्युद्दीन और नामे मुबारक सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ है और वोह ग़ौसे आ'ज़म होगा और उन की जीलान में पैदाइश होगी।"** (सीरते ग़ौसुस्सक़लैन, स. 58)

सुल्ताने विलायत ग़ौसे पाक वलियों पे हुकूमत ग़ौसे पाक
शहबाज़े ख़ित़ाबत ग़ौसे पाक फ़ानूसे हिदायत ग़ौसे पाक
अल्लाह की रह़मत ग़ौसे पाक हैं बाइ़से बरकत ग़ौसे पाक

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ख़ानदाने ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के नानाजान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जीलान शरीफ़ के औलियाए किराम رِحِمَهُمُ الله में से थे। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه निहायत परहेज़ गार होने के इ़लावा साह़िबे फ़ज़्लो कमाल भी थे आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मुस्तजाबुद्दा'वात थे (या'नी आप की दुआ़एं क़बूल होती थीं)। अगर आप किसी शख़्स से नाराज़ होते तो **अल्लाह** पाक उस शख़्स से बदला लेता और जिस से आप ख़ुश होते तो **अल्लाह** पाक उस को इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ता, जिस्मानी त़ौर पर कमज़ोर होने के बा वुजूद आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नवाफ़िल की कसरत किया करते और ज़िक्रो अज़्कार में मसरूफ़ रहते थे। आप अक्सर मुआ़मलात के वाक़ेअ़ होने से पहले उन की ख़बर दे दिया करते थे और जिस त़रह़ आप उन के होने की इत्ति़लाअ़ देते थे उसी त़रह़ ही वाक़िआ़त होते थे। (بهجة الاسرار، ص172)

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की फूफीजान की कुन्यत "उम्मे मुह़म्मद" और नाम "आ़इशा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह" था। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْها नेक और बा करामत ख़ातून थीं। लोग अपनी ज़रूरतों के पूरा होने और दुआ़एं कराने के लिये आप के पास ह़ाज़िर हुवा करते थे।

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के एक भाई भी थे जिन का नाम सय्यिद अबू अह़मद अ़ब्दुल्लाह था। येह हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से उ़म्र में छोटे थे और इ़ल्मो तक़्वा में से काफ़ी ह़िस्सा मिला था मगर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जवानी में फ़ौत हो गए थे। हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का ख़ानदान नेकों का घराना था, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के नानाजान, दादाजान, अब्बूजान, अम्मीजान, फूफीजान, भाई और साह़िब ज़ादगान सब मुत्तक़ी व परहेज़ गार थे, इसी वज्ह से लोग आप के ख़ानदान को "**अशराफ़ का**

ख़ानदान'' कहते थे। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ख़ानदाने ग़ौसे पाक की शानो अ़ज़मत बयान करते हुए लिखते हैं :

मुकर्रम शहा तेरे सारे के सारे हैं आबाओ अज्दाद या ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 555)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

तख़्ते सिकन्दरी पे वोह थूकते नहीं हैं

हुज़ूर ग़ौसे पाक ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में नीमरोज़ मुल्क (जो अब अफ़्ग़ानिस्तान का एक सूबा है) के बादशाह ने लेटर भेजा कि मैं मुल्क का कुछ अ़लाक़ा बत़ौरे जागीर आप को देना चाहता हूं ताकि आप भी मेरी त़रह़ ऐ़शो आराम की ज़िन्दगी गुज़ारें, मेरे प्यारे प्यारे मुर्शिद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस के जवाब में (फ़ारसी में) चार अश्आ़र लिख कर भेजे (जिन का तरजमा कुछ यूं है) :

अगर मेरे दिल में मुल्के सन्जर की कुछ भी हवस हो तो सन्जर के बादशाह के काले रंग के ताज की त़रह़ मेरा नसीब काला हो जाए इस लिये कि जब मुझे दौलते नीमशब (या'नी **अल्लाह** पाक की याद में रातों को जागने) की सल्त़नत ह़ासिल है, सल्त़नते नीमरोज़ की क़ीमत मेरी नज़र में ''**जव**'' के दाने के बराबर भी नहीं। (اخبار الاخیار، ص204)

उन का मंगता पाउं से ठुकरा दे वोह दुन्या का ताज
जिस की ख़ातिर मर गए मुन्ड़म रगड़ कर एड़ियां

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

इ़बादाते ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

ग़ौसे पाक के दीवानो ! हमारे प्यारे प्यारे पीरो मुर्शिद हुज़ूर

ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बहुत ज़ियादा इबादतो रियाज़त और क़ुरआने करीम की तिलावत फ़रमाया करते थे। चुनान्चे मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पन्दरह साल तक रात भर में एक क़ुरआने पाक ख़त्म करते रहे। (بهجة الاسرار، ص118) आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه रोज़ाना एक हज़ार रक्अत नफ़्ल अदा फ़रमाते थे। (تفريح الخاطر، ص36) एक रात जब आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने मा'मूलात का इरादा किया तो नफ़्स ने सुस्ती करते हुए थोड़ी देर सो जाने और बा'द में उठ कर इबादत करने का मश्वरा दिया, जिस जगह दिल में येह ख़याल आया था उसी जगह और उसी वक़्त एक क़दम पर खड़े हो कर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने एक क़ुरआने करीम ख़त्म किया। (सांप नुमा जिन्न, स. 15) हो सकता है किसी के ज़ेह्न में येह सुवाल पैदा हो कि बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ इतनी ज़ियादा इबादत कैसे किया करते थे ? तो इस का जवाब येह है कि नेक बन्दों के दिल महब्बते इलाही और परहेज़ गारी से आबाद होते हैं, येह अपने दिलों से दुन्या की महब्बत निकाल देते हैं, इन की रूहें ज़िक्रे इलाही के बिग़ैर बेचैनो बे क़रार रहती हैं, इस लिये वोह हर लम्हा यादे इलाही में मसरूफ़ रहते हैं और येह मक़ाम इबादतो रियाज़त में सख़्त मेहनत करने से हासिल होता है। सोश्यल मीडिया की एक पोस्ट (कुछ तब्दीली के साथ बयान करता हूं) जिस में किसी ने कुछ यूं चोट की थी : आज जिस त़रह़ लोग सारी सारी रात सोश्यल मीडिया पर चेटिंग करने, वीडियोज़ देखने वग़ैरा में गुज़ार देते हैं और बारहा थकन व कोफ़्त का इज़्हार भी नहीं होता, अब पता चला कि पहले के बुज़ुर्ग कैसे सारी सारी रात इबादात में गुज़ार देते थे कि उन का चैनो क़रार यादे परवर्दगार में था जिस वज्ह से वोह अपने पाक परवर्दगार की याद में इस त़रह़ मश्ग़ूल हो जाते कि सारी रात गुज़र जाने का पता न चलता और हम दुन्या की

लज़्ज़तों में ऐसे बद मस्त हैं कि हमें दुन्यावी ख़्वाहिशात से होश ही नहीं आता। सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हम जैसे ग़ाफ़िलों को जगाने के लिये लिखते हैं :

किस बला की मै से हैं सरशार हम दिन ढला होते नहीं हुशियार हम
मैं निसार ऐसा मुसल्मां कीजिये तोड़ डालें नफ़्स का ज़ुन्नार हम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का ख़ौफ़े ख़ुदा

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! अल्लाह वालों का हमेशा से येह त़रीक़ा रहा है कि ढेरों नेकियां करने और गुनाहों से बचने के बा वुजूद वोह बे पनाह ख़ौफ़े ख़ुदा रखते थे। सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه भी बे पनाह ख़ौफ़े ख़ुदा रखते थे चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शरफ़ुद्दीन सा'दी शीराज़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को ह़रमे का'बा में देखा गया कि कंकरियों पर सर रखे बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ गुज़ार हैं : **''ऐ रब्बे करीम ! मुझे बख़्श दे और अगर मैं सज़ा का ह़क़दार हूं तो बरोज़े क़ियामत मुझे अन्धा उठाना ताकि नेकोकार लोगों के सामने शरमिन्दा न होउं।''**

(گلستانِ سعدی، ص54 انتشاراتِ عالمگیر ایران)

अल्लाह ! अल्लाह ! औलियाए किराम के सरदार होने के बा वुजूद ख़ौफ़े ख़ुदा का आ़लम सद करोड़ मरह़बा ! आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ीद ख़ौफ़े ख़ुदा का अन्दाज़ा इन अश्आ़र से लगाइये, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ईद के दिन फ़रमाया (तरजमा) : **''लोग कह रहे हैं कि कल ईद है ! कल ईद है ! और सब ख़ुश हैं लेकिन मैं तो जिस दिन इस दुन्या से अपना ईमान सलामत ले कर गया मेरे लिये तो वोही दिन ईद होगा।''**

है अ़त्तार को सल्बे ईमां का धड़का बचा इस का ईमां बचा ग़ौसे आ'ज़म
हो अ़त्तार की बे सबब बख़्शिश आक़ा येह फ़रमाएं हक़ से दुआ ग़ौसे आ'ज़म

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! हम कैसे ग़ौसे पाक के आ़शिक़ हैं कि हमारे पीरो मुर्शिद तो पीराने पीर, वलियों के सरदार हो कर भी इतनी इतनी इ़बादतें करें और एक हम हैं कि हम से फ़र्ज़ नमाज़ भी न पढ़ी जाए और पढ़ें भी तो बिला इजाज़ते शर्ई जमाअ़त के बिग़ैर । याद रखिये ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो (एक) नमाज़ क़ज़ा करता है तो वोह हज़ारों साल जहन्नम के अ़ज़ाब का ह़क़दार है और येह भी याद रखिये कि जान बूझ कर बिला इजाज़ते शर्ई जमाअ़त छोड़ना भी सख़्त गुनाह है । मह़ब्बत करने वाला अपने मह़बूब के नक़्शे क़दम पर चलता (या'नी उस को Follow करता) है । लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि मह़ब्बते ग़ौसे आ'ज़म का दम भरने के साथ साथ नमाज़ों की पाबन्दी करें, फ़र्ज़ रोज़े रखें, हमेशा हर ह़ाल में सच बोलें और **अल्लाह** पाक से डरते रहें । **आह आह आह !!!**

गुनाहों ने मुझ को कहीं का न छोड़ा न हो जाऊं बरबाद या ग़ौसे आ'ज़म
मुझे नफ़्से ज़ालिम पे कर दीजे ग़ालिब हो नाकाम हमज़ाद या ग़ौसे आ'ज़म
मेरे क़ल्ब से ह़ुब्बे दुन्या की मुर्शिद उखड़ जाए बुन्याद या ग़ौसे आ'ज़म

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मज़ार शरीफ़ से बाहर आ कर गले लगा लिया

इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन हैती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ की ज़ियारत की, मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه क़ब्र से

बाहर तशरीफ़ लाए और सय्यिदी हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को अपने सीने से लगा लिया और इन्हें ख़िल्अ़त (बेहतरीन लिबास) पहना कर इर्शाद फ़रमाया : **''ऐ शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ! बेशक मैं इल्मे शरीअ़त, इल्मे ह़क़ीक़त, इल्मे ह़ाल और फ़े'ले ह़ाल में तुम्हारा मोह़ताज हूं।''**

(بہجۃ الاسرار، ص226)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : शरीअ़त हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़्वाल हैं और त़रीक़त हुज़ूर के अफ़्आ़ल और ह़क़ीक़त हुज़ूर के अह़वाल और मा'रिफ़त हुज़ूर के उ़लूमे बे मिसाल।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/460)

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 26 सफ़ह़ा 433 पर है : हुज़ूर (या'नी ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) हमेशा से ह़म्बली थे और बा'द को जब ऐ़नुश्शरीअ़तिल कुब्रा तक पहुंच कर मन्सबे इज्तिहादे मुत़्लक़ ह़ासिल हुवा मज़्हबे ह़म्बल को कमज़ोर होता हुवा देख कर इस के मुत़ाबिक़ फ़तवा दिया कि हुज़ूर (या'नी ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) मुह़्युद्दीन (या'नी दीन को ज़िन्दा करने वाले) और दीने मतीन के येह चारों सुतून हैं लोगों की त़रफ़ से जिस सुतून में ज़ो'फ़ आता (या'नी कमज़ोर होता) देखा उस की तक़्वियत फ़रमाई। (या'नी उस को मज़बूत़ फ़रमाया।)

जो वली क़ब्ल थे या बा'द हुए या होंगे सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

त़ुलबाए किराम से मह़ब्बते ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का दीनी त़लबा पर शफ़्क़त का एक पहलू येह भी था कि आप उन की कमज़ोरियों को नज़र अन्दाज़ फ़रमा दिया करते थे, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

फ़रमाते हैं कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास एक अ़जमी (या'नी ग़ैरे अ़रबी) त़ालिबे इ़ल्म था, वोह बहुत ही कुन्द ज़ेह्न था, बहुत ही मुश्किल से कोई चीज़ उसे समझ आती थी, एक दफ़्आ़ वोह त़ालिबे इ़ल्म आप के पास बैठा सबक़ पढ़ रहा था कि इब्ने सम्ह़ल नामी एक शख़्स हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा, जब उस ने उस त़ालिबे इ़ल्म की कुन्द ज़ेह्नी और आप का उस की कुन्द ज़ेह्नी पर सब्रो तह़म्मुल देखा तो उसे बहुत तअ़ज्जुब हुवा, जब वोह त़ालिबे इ़ल्म वहां से उठ कर चला गया तो इब्ने सम्ह़ल ने अ़र्ज़ किया कि इस त़ालिबे इ़ल्म की कुन्द ज़ेह्नी और आप के सब्र पर मुझे ह़ैरत है। आप ने फ़रमाया कि मेरी मेह़नत उस के साथ बस एक हफ़्ते से भी कम है क्यूं कि इस त़ालिबे इ़ल्म का इन्तिक़ाल हो जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुबारक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि उस दिन से हम ने उस त़ालिबे इ़ल्म के दिन गिनना शुरूअ़ कर दिये और जब एक हफ़्ता पूरा होने को आया तो आख़िरी दिन वाक़ेई उस का इन्तिक़ाल हो गया। (قلائد الجواہر، ص8 ملخصاً)

असातिज़ा के लिये दर्स

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : उस्ताज़ शागिर्दों पर शफ़्क़त करे और उन्हें अपने बेटों जैसा समझे। उस्ताज़ का मक़्सूद येह हो कि वोह शागिर्दों को आख़िरत के अ़ज़ाब से बचाएगा। (احیاء العلوم، جلد1 ص191)

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दर्सो तदरीस, तस्नीफ़ो तालीफ़, वा'ज़ो नसीह़त और इस के इ़लावा मुख़्तलिफ़ इ़ल्मी शो'बों में इन्तिहाई महारत रखते थे, मगर ख़ास त़ौर पर फ़तवा नवीसी में तो आप को वोह कमाल ह़ासिल था कि उस दौर के बड़े बड़े उ़लमा, फ़ुक़हा और मुफ़्तियाने

किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام भी आप के ला जवाब फ़तवों से हैरान रह जाते थे। शैख़ इमाम मुवफ़्फ़िक़ुद्दीन बिन क़ुदामा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम ने देखा कि शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उन में से हैं कि जिन को वहां (बग़दाद) पर इ़ल्मो अ़मल और फ़तवा नवीसी की बादशाहत दी गई है। (بهجة الاسرار، ص225) आप की इ़ल्मी महारत का येह आ़लम था कि अगर आप से इन्तिहाई मुश्किल मसाइल भी पूछे जाते तो आप उन मसाइल का निहायत आसान और ख़ूब सूरत जवाब देते, आप ने दर्सो तदरीस और फ़तवा नवीसी में तक़रीबन 33 साल दीने इस्लाम की ख़िदमत की, इस दौरान जब आप के फ़तावा उ़लमाए इ़राक़ के पास लाए जाते तो वोह आप के जवाब पर हैरान रह जाते। (بهجة الاسرار، ص225 ملتقطا وملخصاً)

उ़लूमे मुस्त़फ़ा व मुर्तज़ा के तुम्हीं पर हैं खुले असरार या ग़ौस

नेकी की दा'वत का अ़ज़ीम जज़्बा

हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि शुरूअ़ शुरूअ़ में सोते जागते मुझ पर बस اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ (नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने) की धुन सुवार रहती और मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत के लिये इस क़दर बे क़रार रहता कि ख़ुद पर भी इख़्तियार न रहता और मेरे पास दो तीन आदमी भी होते तो मैं उन्हें ही क़ुरआनो सुन्नत की बातें सुनाने लगता फिर मेरे पास लोगों का इतना कसीर हुजूम होने लगा कि मजलिस में जगह बाक़ी न रही। चुनान्चे मैं ईदगाह चला गया और वा'ज़ो नसीह़त करने लगा, वहां भी जगह तंग हो गई तो लोग मिम्बर शह्र से बाहर ले गए और बे शुमार मख़्लूक़ सुवार और पैदल हो कर आती और इज्तिमाअ़ के बाहर इर्द गिर्द खड़ी हो कर वा'ज़ सुनती ह़त्ता कि सुनने वालों की ता'दाद सत्तर हज़ार (70000) के क़रीब पहुंच गई।

13 उ़लूम में बयान

शैख़ अ़ब्दुल वहहाब शा'रानी, शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी और अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन यह़्या ह़लबी رَحِمَهُمُ الله लिखते हैं : "**ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तेरह उ़लूम में बयान फ़रमाया करते थे ।**" अ़ल्लामा शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक और जगह फ़रमाते हैं : हु़जू़रे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मद्रसे शरीफ़ में लोग आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह और इ़ल्मुल कलाम पढ़ते थे, दोपहर से पहले और बा'द दोनों वक़्त लोगों को तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, कलाम, उसूल और नह़्व पढ़ाते थे और ज़ोह्र के बा'द क़िराअतों के साथ कु़रआने करीम पढ़ाते थे । (اخبارالاخیار، ص11)

हु़जू़रे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक हफ़्ते में तीन बार बयान फ़रमाते थे, मद्रसे में जुमुए़ की सुब्ह़ को, मंगल की शाम को और सराए में इतवार की सुब्ह़ को ।

एक लाख से ज़ाइद बे अ़मल ताइब हुए

आप की मजलिस में 400 ज़बर दस्त आ़लिम आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बयान को लिखा करते थे और बसा अवक़ात मजलिस की ह़ालत में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हवा पर चन्द क़दम उड़ कर फिर कुरसी पर आ कर बैठा करते थे । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरा जी चाहता है कि जिस त़रह़ में पहले था अब भी जंगलों में रहूं कि न मैं लोगा को देखूं न वोह मुझे देखें फिर फ़रमाया कि **अल्लाह** पाक ने मुझ से येह चाहा कि लोगों को फ़ाएदा पहुंचे क्यूं कि मेरे हाथ पर यहूदो नसारा में से पांच सो से ज़ियादा मुसल्मान हुए हैं और मेरे हाथ पर एक लाख से ज़ाइद बे अ़मल ताइब हुए हैं और येह बड़ी नेकी है । (بہجۃ الاسرار، ص184)

वा'ज़ों की तेरे मुर्शिद है धूम चार जानिब मैं भी कभी तो सुन लूं मीठा कलाम कहना
जल्वा दिखाना मुर्शिद कल्मा पढ़ाना मुर्शिद जिस दम हो ज़िन्दगी का लबरेज़ जाम कहना

अ़त्तार को बुला कर मुर्शिद गले लगा कर फिर ख़ूब मुस्कुरा कर करना कलाम कहना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

13 नसारा का क़बूले इस्लाम

एक मरतबा हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में 13 नसारा आए और आप के हाथ पर मजलिसे वा'ज़ में मुसल्मान हुए फिर कहने लगे कि हम मग़रिब के अ़लाक़े के नसारा हैं। हम ने इस्लाम का इरादा किया लेकिन हमें तरद्दुद (शक) था कि कहां जा कर इस्लाम लाएं। तब हम ने ग़ैब से आवाज़ सुनी कि : **''ऐ काम्याब गुरौह ! तुम बग़दाद जाओ और शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर के हाथ पर मुसल्मान हो जाओ क्यूं कि उन की बरकत से तुम्हारे दिलों में वोह ईमान दिया जाएगा कि जो और जगह ह़ासिल न होगा।''** (بهجة الاسرار، ص185)

बयां सुन के तौबा गुनहगार कर लें ज़बां में वोह दे दो असर ग़ौसे आ'ज़म

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

''नह्व'' का इमाम बना दूंगा

इमाम अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन ख़श्शाब नह्वी कहते हैं : मैं जवानी की ह़ालत में इ़ल्मे नह्व (अ़रबी ग्रामर) पढ़ा करता था। मैं लोगों से हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दिल नशीन बयान की ख़ूबियां सुना करता था। मैं इरादा करता था कि मैं आप का बयान सुनूं मगर अपने वक़्त में वुस्अ़त न पाता था एक दिन मैं ने पक्का इरादा कर लिया और हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मजलिस में ह़ाज़िर हो गया जब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कलाम फ़रमाया तो मेरे दिल को आप का कलाम सुन कर मज़ा न आया और न ही मैं कलाम समझ पाया। मैं ने अपने दिल में कहा : मेरा आज का दिन ज़ाएअ़ हो गया। उसी वक़्त हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मेरी त़रफ़

मुतवज्जेह हो कर इर्शाद फ़रमाया : तेरे लिये हलाकत हो तू ज़िक्र की मजलिस पर इल्मे नह्व (अ़रबी ग्रामर) को फ़ज़ीलत देता है और इस को इख़्तियार करता है ? हमारी सोहबत इख़्तियार कर हम तुझे (अ़रबी ग्रामर के मश्हूर इमाम) सीबवैह बना देंगे । येह सुन कर इमाम अबू मुहम्मद अ़ब्दुल्लाह बिन ख़श्शाब नह्वी ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास ही रहने लगे जिस का नतीजा येह ज़ाहिर हुवा कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नह्व के साथ कई उ़लूम में माहिर (Expert) हो गए । (قلائد الجواهر، ص32، تاريخ الاسلام للذهبی، 267/39)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

औलियाए किराम के सरदार

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 26 सफ़हा 559 पर है : इस में शक नहीं कि हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मर्तबा बहुत आ'ला व अफ़्ज़ल है । ग़ौस अपने दौर में सारी दुन्या के औलिया का सरदार होता है और हमारे ग़ौसे पाक, इमामे ह़सन अ़स्करी رَضِىَ اللهُ عَنْه के बा'द से सय्यिदुना इमाम महदी رَضِىَ اللهُ عَنْه की तशरीफ़ आवरी तक सारी दुन्या के ग़ौस और सब ग़ौसों के ग़ौस और सब औलियाउल्लाह के सरदार हैं और उन सब की गरदन पर इन का क़दमे पाक है ।

(نزهة الخاطر الفاتر، ص6, फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 559 मअ़त्तस्हील)

इमाम अबुल ह़सन अ़ली शत़नौफ़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : शैख़ ख़लीफ़ए अक्बर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बड़ी कसरत से दीदार करते थे । उन्हों ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! बेशक मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ने फ़रमाया है कि मेरा पाउं हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर है । तो **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अ़ब्दुल**

क़ादिर ने सच कहा और क्यूं न हो कि वोही क़ुत़्ब हैं और मैं उन का निगह्बान हूं ।" (بهجة الاسرار، ص10 مصر)

इमाम इब्ने ह़जर मक्की शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **फ़तावा ह़दीसिय्या** में फ़रमाते हैं : कभी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ الله को कलिमाते बुलन्द (बड़ी बड़ी बातें) कहने का हुक्म दिया जाता है ताकि जो उन के बुलन्द मक़ामात से ना वाक़िफ़ है उसे पता चले या शुक्रे इलाही और उस की ने'मत का इज़्हार करने के लिये जैसा कि हु़ज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के लिये हुवा कि उन्हों ने अपने बयान में अचानक फ़रमाया कि मेरा येह पाउं हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर, फ़ौरन तमाम दुन्या के औलिया ने क़बूल किया (और एक गुरौह ने रिवायत किया है कि सब औलियाए जिन्न ने भी) सर झुका दिये । (الفتاوى الحديثيه، ص414، داراحياء التراث العربي بيروت)

बहुत से आ़रिफ़ीने किराम (**अल्लाह** पाक की पहचान रखने वाले बुज़ुर्गों) ने फ़रमाया है कि हु़ज़ूर सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने "قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ الله" अपनी त़रफ़ से न फ़रमाया बल्कि **अल्लाह** पाक ने उन की क़ुत़्बिय्यते कुब्रा (या'नी बहुत बड़ा वलिय्युल्लाह होना) ज़ाहिर करने के लिये उन्हें फ़रमाने का हुक्म दिया । लिहाज़ा किसी वली को गुन्जाइश न हुई कि गरदन न झुकाता और क़दमे मुबारक अपनी गरदन पर न लेता बल्कि कई रिवायतों में है कि बहुत से पहले के औलियाए किराम رَحِمَهُمُ الله ने हु़ज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादते मुबारका (Birth) से तक़रीबन सो साल पहले ख़बर दी थी कि अ़न्क़रीब अ़जम में एक साह़िबे अ़ज़ीम पैदा होंगे और येह फ़रमाएंगे कि "**मेरा येह पाउं हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर**" इस फ़रमाने पर उस वक़्त के तमाम औलिया उन के क़दम के नीचे सर रखेंगे और उस क़दम के साए में दाख़िल होंगे । (ایضاً)

ग़ौस पर तो क़दम नबी का है, उन के ज़ेरे क़दम वली सारे

हर वली ने येही पुकारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

दम दमादम दस्त गीर	ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर	आप वलियों के अमीर	ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर
मेरा पीरा मेरा पीरा	ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर	बे मिसालो बे नज़ीर	ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर
महबूबे रब्बे क़दीर	ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर	आप हैं पीरों के पीर	ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर
दिल पसन्दो दिल पज़ीर	ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर	ज़ेर हो नफ़्से शरीर	ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर
काश मैं बन जाऊं पीर	ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर	आ गए मुन्कर नकीर	ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर
तेरी ज़ुल्फ़ों का असीर	ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर	हो करम ऐ मेरे पीर	ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

सिल्सिलए क़ादिरिय्या में मुरीद व तालिब होने की बरकत !

फ़रमाने ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **:** **अल्लाह** पाक ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि मेरे मुरीदों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा । (بهجة الاسرار، ص ۱۹۳ ملخصاً)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस दौर की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत हैं जिन की बरकत से लाखों मुसल्मानों की ज़िन्दगियां बदल गईं और वोह राहे सुन्नत पर चल पड़े, ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तहत **मदनी मश्वरा** है कि आप भी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए सय्यिदी हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सिल्सिले में मुरीद हो जाइये और अगर आप पहले से किसी पीर साहिब के मुरीद हैं तो बैअ़ते बरकत हासिल करने के लिये तालिब हो जाइये, اِنْ شَآءَالله दुन्या व आख़िरत में इस की ख़ूब बरकतें नसीब होंगी ।

सुना لَاتَخَفْ तेरा फ़रमान आ़ली   ग़ुलामों की ढारस बंधी ग़ौसे आ'ज़म

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बरकत न हो तो फिर कहना !!!

अज़ : अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हो सके तो हर रोज़ (नफ़्अ़ पर नहीं बल्कि) अपनी बिकरी का एक फ़ीसद और मुलाज़िमत करने वाले तनख़्वाह का माहाना कम अज़ कम तीन फ़ीसद सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नियाज़ के लिये निकाल लिया करें। इस रक़म से दीनी किताबें तक़्सीम करें या किसी भी नेक काम में ख़र्च करें इस की बरकतें ख़ुद ही देखेंगे।

(मदनी पंजसूरह, स. 416)

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net